SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

कोरवा जनजाति में सामाजिक कुरीतियों का प्रभावः एक अध्ययन

अलका पाण्डेय, (Ph.D.), इतिहास विभाग,
श्री साँई बाबा आदर्श महाविद्यालय, अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
अलका पाण्डेय, (Ph.D.), इतिहास विभाग,
श्री साँई बाबा आदर्श महाविद्यालय,
अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 21/09/2021
Revised on : -----
Accepted on : 28/09/2021
Plagiarism : 01% on 21/09/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Tuesday, September 21, 2021
Statistics: 17 words Plagiarized / 1213 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

^^dksjok tutkfr esa lkekftd dqjhfr;ksa dk izHkko^^ %^^,d v/;;u^^ la{ksfidk ekuo dh izxfr ,oa fodkl dk Øe lgL=kfCn;ksa ls izdfr'khyrk dk jgk gS] ;g Hkh ,d foMEcuk ;k lkSHkkX; gh dgk tk, dh lEiw.kZ Hkkjr esa dqN ,slh Hkh tutkfr;k; vn~;ru fo|eku gS tks ifjorZu dh lkis{krk ls viuk laca/k LFkkfir ugha dj ik;h gSA fof'k"V vkfne tutkfr;ksa esa Hkkjr dh izkphure /kjrh ij NÙkhlx< ds izkÑfrd lq"kek ls lEiUu ljxqtk ftys dh nqqxZe igkfM+;ksa ij fuokl djus okyh dksjok tutkfr gS ;g tutkfr eq[;r% nks Hkkxksa es foHkDr gSA igkM+ks ij fuokl djus okyh igkM+h dksjok rFkk lery Hkwfe ij fuokl djus okyh Mhg dksjok ds :i esa

शोध सार

मानव की प्रगति एवं विकास का क्रम सहस्त्राब्दियों से प्रगतिशीलता का रहा है। यह भी एक विडम्बना या सौभाग्य ही कहा जाए की सम्पूर्ण भारत में कुछ ऐसी भी जनजातियाँ अद्यतन विद्यमान है जो परिवर्तन की सापेक्षता से अपना संबंध स्थापित नहीं कर पायी है। विशिष्ट आदिम जनजातियों में भारत की प्राचीनतम धरती पर छत्तीसगढ के प्राकृतिक सुषमा से सम्पन्न सरगुजा जिले की दुर्गम पहाड़ियों पर निवास करने वाली कोरवा जनजाति है, यह जनजाति मुख्यतः दो भागों मे विभक्त है। पहाड़ो पर निवास करने वाली पहाड़ी कोरवा तथा समतल भूमि पर निवास करने वाली डीह कोरवा के रूप में जानी जाती है। कोरवा जनजाति जिले के भीतरी भागों में निवासरत होने के कारण शिक्षा से विमुख रही, इसलिए इस जनजाति समाज में जागरूकता की कमी से प्रचलित मान्यताएँ तथा अंधविश्वास की स्पष्ट छाप परीलक्षित होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में ''कोरवा जनजाति में सामाजिक कुरीतियों के प्रभाव'' विषय पर गहन अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द

कोरवा, पिछड़ी जनजाति, सामाजिक कुरूतियाँ.

प्रस्तावना

मानव का इतिहास उसके बौद्धिक विजय के अभियान की वह एक अजर्स धारा का प्रतिरूप होती है, जहाँ विकास के बढ़ते चरण सभ्यता एवं संस्कृति को समवेत रूप से प्रस्तुत करते हुए दृष्टिगत होते हैं, इस दृष्टि से कोरवा संस्कृति अपनी विशिष्ट महत्ता को संजोये होने के पश्चात् भी अन्य समस्याओं के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में अवश्य ही पीछे छूट गयी है, इसलिए सभ्यता का प्रथम चरण सांस्कृतिक मूल्य भी कहीं पर अवमूल्यित किए जाने का ऐतिहासिक एवं

विवेचनात्मक रूप प्राप्त होता है एवं इस जनजातिय समाज में जागरूकता की कमी से प्रचलित मान्यताएँ, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता स्पष्ट परिलाक्षित है।

जनजातिय परिचय

छत्तीसगढ़ जनजाति बाहुल्य राज्य है, दुर्गम एवं दुरस्थ स्थान में निवास करने वाले ऐसे समूह को जनजाति कहा जाता है, जिसका विशिष्ट नाम, भाषा सांस्कृतिक एवं आर्थिक आधार होता है। सरगुजा जिले के दुर्गम पहाड़ियों पर निवास करने वाली कोरवा जनजाति वास्तव में पहाड़ो पठारों एवं घने वनांचलों के मध्य निवास करती है। यह जनजाति मुख्यतया दो भागों में विभक्त है। पहाड़ो पर निवास करने वाली पहाड़ी कोरवा तथा समतल भूमि पर निवास करने वाली डीह कोरवा के रूप में जानी जाती है। प्रारंभकाल से ही पहाड़ी कोरवा दुर्गम घने वनाच्छादित क्षेत्रों में रहने के कारण समय के साथ विकास को आत्मसात् न करते हुए पुरातन परंपरा के साथ अन्य जातियों की तुलना में पिछड़े रह गए थे।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य सरगुजा जिले के कोरवा जनजाति समाज में रूढ़िवादिता, अंधविश्वास के विषय में जानकारी प्राप्त करना था।

शोध प्रविधि

सरगुजा आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है चूंकि सरगुजा के लुण्ड्रा ब्लॉक में कोरवा जनजाति है, अतः लुण्ड्रा ब्लॉक का चयन निर्देशन पद्धति से किया गया है। प्रस्तुत शोध में प्राथमिक एवं द्वितीय दोनों आंकड़ो को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

परिणाम एवं व्याख्या

संस्कृति मानव ज्ञान के साथ उसके विकास क्रम की परिचायक होती है, जो विरासत के रूप में परीलक्षित एवं विवेचित होती है। संस्कृति मानव जीवन में उसी तरह व्याप्त होती है, जिस प्रकार फूलों में सुगंध और दूध में मक्खन। इसी प्रकार कोरवाओं की भी अपनी एक विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत है, अभावों में जुझती हुई यह जनजाति अपने सीमित दायरे में अत्यंत कम परिवर्तन के साथ ज्यों की त्यों बनी हुई है। अपने सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को आधारित करते हुए कोरवाओं में पितृ प्रधान समाज का अवलोकन होता है। इनके जीवन में जन्म से मृत्युपरांत तक के विविध क्रियाकलाप में अधिकांशतः सामाजिक कुरीतियों एवं अंधविश्वास की छाप स्पष्ट परीलक्षित होती है।

एक सर्वेक्षण में धार्मिक रीति–रिवाजों के संबंध में कोरवाओं से यह ज्ञात हुआ की ये लोग अपने पूर्वजों को ही विशेष आस्था के साथ पूजते हैं, इनकी यह मान्यता है कि जब इन पर कोई विपत्ति या प्राकृतिक विपदा आती है, तो इनके पूर्वज ही सभी समस्याओं को हरण करते हैं।

कोरवाओं का यह मानना है कि यदि ये लोग अपने पूर्वजों की पूजा नहीं करेगें तो इनके ग्राम में कई प्रकार की बीमारियाँ अपने भयानक और मारक पाँव पसार देगी, साथ ही विवाह भी सफल नहीं होगा। परिवार में कोई भी बच्चे जीवित नहीं रहेगें, इसलिए ये लोग (जन्म विवाह इत्यादि) होने पर अपने पूर्वजों का आह्वाहन करते हैं।

कोरवा समाज में गर्भवती माँ द्वारा बच्चा जनने की प्रक्रिया कुछ पृथक है। बच्चा जनने की स्थिति में गर्भवती माँ को घर से दूर दूसरे झोपड़ी में रखा जाता है यह विशेष कक्ष ''देवारे ओरा'' या ''सौरी औरा'' के नाम से जाना जाता है। (किसी कारणवश यदि बच्चा जनने में विलम्ब होता है तो वे ओझा या बैगा को बुरी आत्माओं के प्रभाव से बचाने के लिए तत्काल बुलाते हैं। जन्म से छः दिनों तक बुरी आत्माओं के संकट की संभावना प्रकट की जाती है। इसलिए सौरी–औरा के बाहर आग जलाई जाती है, जिससे उत्पन्न होने वाला धुंआ बुरी आत्माओं को समीप भटकने नहीं देता।

जनजातियों में वैवाहिक संबंध लगभग सामान्य होते हैं किन्तु कोरवा जनजाति में कुछ अंतर दिखाई देता है

यदि लड़का पसंद आ जाता है तो वर पक्ष की ओर से पहल की जाती है तथा कन्या पक्ष को धन नगद रूपया तथा वस्त्र देने की प्रथा है जिसकी पुष्टि साक्षात्कारों से की गयी। लड़के वाले लड़की को प्राप्त करने के लिए धनाभाव के कारण कभी–कभी भूमि भी बेच देते हैं साथ ही विवाह प्रस्ताव के समय एक मुर्गा,बकरा,दाल तथा चावल अपनी क्षमता अनुसार कन्या पक्ष को दिया जाता है।उक्त सामाग्री का स्वीकार किया जाना इस बात का द्योतक है कि उनका प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया गया है।

वैवाहिक मांगलिक अवसर पर इन लोगों द्वारा घसिया बाजा (पारंपरिक) बजवाया जाता है। कभी–कभी ये लोग विवाह में बांस का बना बाजा भी बजाते हैं, इसके पश्चात ये लोग उत्तर तथा दक्षिण की ओर प्रणाम करते हैं। यह उनके पूर्वजों के लिए एक श्रद्धांजली और उनके लिए एक आर्शीवाद की प्रक्रिया होती है।इन लोगों में यह भावना पाई जाती है कि विवाह में यदि पूर्वजों की पूजा नहीं की जाएगी तो विवाह सफल नहीं होगा। इस प्रक्रिया के पश्चात् उत्सव मनाया जाता है, जिसके अंतर्गत सभी महुआ की शराब पीकर नृत्य करते हैं।

सर्वेक्षण के अनुसार यह ज्ञात हुआ कि पहाड़ी कोरवा समाज में घर में किसी की भी मृत्यु होती है तो ये लोग अंतिम संस्कार करने के बाद उस घर में वापस नहीं जाते हैं, उस घर को जला देते हैं। इनका मानना है कि ऐसा न करने से मरने वाला व्यक्ति उसी घर में वापस आ जाता है और भूत बनकर सताता है। आजकल सरकारी प्रयासों से यह परंपरा कुछ कम हुई है।

निष्कर्ष

स्पष्ट है कि वनांचलों के मध्य स्थित होने वाली इस जनजाति में जागरूकता की कमी से प्रचलित मान्यताएँ ही दृष्टिगत होती है। अभी भी कोरवा समाज सहस्त्राब्दियों से जुड़े हुए अपनी लोक परंपरा के प्रति समर्पित है।

संदर्भ सूची

1. नारायण अबिनिन्दर, (1990) *''द कोरवा ट्राइब्स, देअर सोसायटी एण्ड इकानॉमिक्स'',* अमर प्रकाशन देहली।
2. तिवारी, शिवकुमार, *''मध्यप्रदेश की जनजातियाँ''*
3. दुबे एस.पी. (आई.ए.एस.) *पहाड़ी कोरवा ''व्यतीत वर्तमान और विभव''*।
4. सिंह, देव समर बहादुर, *''सरगुजा एक अध्ययन''*
5. रिजवी, बी.आर., *''हिल कोरवास ऑफ छत्तीसगढ़''*
6. वर्मा, आर.शी., (1997) *''भारतीय जनजातियाँ अतीत के झरोखे से'',* पब्लिकेशन डिविजन गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
7. रसेल, आर.बी. तथा हीरालाल, (1916) ''द ट्राइबल्स एण्ड कास्ट्स ऑफ द सेंट्रल'' *प्राविन्स ऑफ इंडिया* वाल्यूम 3।
8. सर्वेक्षित ब्लॉक, लुण्ड्रा।

****